२०२२-२०२३

केरल ज्योति

जुलाई 2022

ISSN 2320-9976
UGC Care - List Sr. No.58

केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

N.S.S. COLLEGE PANDALAM

PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandalam

Scanned with CamScanner

केरलज्योति

केरल हिंदी प्रचार सभा
की मुख पत्रिका
(केंद्रीय हिंदी निदेशालय की वित्तीय सहायता से प्रकाशित)

पूर्व समीक्षा समिति
प्रो.(डॉ). एन.रवींद्रनाथ
प्रो.(डॉ). सुधा बालकृष्णन
प्रो.(डॉ.) आर. जयचन्द्रन

परामर्श मंडल
डॉ.तंकमणि अम्मा एस
डॉ.लता पी
डॉ. रामचन्द्रन नायर जे

प्रबन्ध संपादक
गोपकुमार एस (अध्यक्ष)

मुख्य संपादक/संपादकीय दायित्व
प्रो.डी.तंकप्पन नायर

संपादक
डॉ. रंजीत रविशैलम

संपादकीय मंडल
सदानन्दन जी
श्रीकुमारन नायर एम
प्रो.रमणी वी एन
चन्द्रिका कुमारी एस
एल्सी सामुवल
आनन्द कुमार आर एल
प्रभन जे एस
अधिवक्ता मधु बी (मंत्री)

सूचना : लेखकों द्वारा प्रकट किये गये मत उनके अपने हैं। उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

पृष्ठ : 59 दल : 4 अंक: जुलाई 2022

अनुक्रमणिका

संपादकीय 5

परम ज्योति में समा गए स्व. मुरलीधरन को शत शत प्रणाम
अधिवक्ता मधु.बी 6

नादिरा ज़हीर बब्बर का नाट्य लेखन और नारी जागरण
डॉ.अंबिली.वी.एस. 8

समकालीन हिंदी कविता में प्रकृति का रुदन
बिजिना.टी 11

किन्नर समाज की समस्याएँ : एक अवलोकन
डॉ. राजेष कुमार.आर 16

नारी संवेदना के धरातल पर 'कस्तूरी कुण्डल बसै'
अखिल.ए. 19

समकालीन हिंदी एवं नेपाली कविता : संवेदना के विविध स्वर
डॉ.उमा देवी 21

चिंतारत्न - मूल : तुंचत्तु रामानुजन एषुत्तच्छन
अनुवादः प्रो. डी. तंकप्पन नायर व अधिवक्ता मधु. बी. 27

दूनी गाँठ की गठरी - मूल : के.एल. पॉल
अनुवाद : प्रो.डी.तंकप्पन नायर व अधिवक्ता मधु.बी. 34

प्रश्नोत्तरी - डॉ. एस. श्रीदेवी 42

मुखचित्र : एरणाकुळम भवन्स विद्या मंदिर में प्रो.एम.के.सानु सुगम हिंदी पुरस्कार वितरण समारोह का उद्घाटन दीप जलाकर कर रहे हैं।

PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandalam

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

Scanned with CamScanner

नादिरा ज़हीर बब्बर का नाट्य लेखन और नारी जागरण

डॉ.अंबिली.वी.एस.

समकालीन महिला नाटककारों में नादिरा ज़हीर बब्बर की खास पहचान है। इन्होंने नारी जीवन के विभिन्न पक्षों की नाट्य प्रस्तुति करके समाज को जागृत करने व स्त्री को अस्मिता बोध से संपन्न करने का सराहनीय कार्य किया है। इस सन्दर्भ में डॉ.भगवान जाधव का कथन उल्लेखनीय है। उन्होंने नाटकों में देश की नारी जीवन की समस्याएँ समाज के सामने रखकर देशकाल के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की है। (डॉ.भगवान जाधव,हिन्दी महिला नाटककार, पृ.133) हिन्दी नाट्य अभिनय, लेखन, निर्देशन एवं मंचन के क्षेत्र में नादिरा जी का महत्वपूर्ण योगदान है। उनका जन्म 20 जनवरी 1948 को लखनऊ के सुसंस्कृत- संभ्रान्त परिवार में हुआ था। ये प्रगतिशील लेखक संघ के संस्थापक सज्जाद ज़हीर की बेटी हैं। इनके पति मशहूर अभिनेता -नेता राज बब्बर हैं। इन्होंने अपनी नाट्य संस्था' एकजुट' के माध्यम से मंच के क्षेत्र में कई नए प्रतिमान कायम किए हैं। उनके नाटकों में 'शराफत छोड़ दी मैंने', 'दयाशंकर की डायरी', 'दिल ही तो है', 'सकुबाई', 'सुमन और सना', 'जी जैसी आपकी मर्ज़ी, 'ऑपरेशन क्लाउडबर्स्ट' आदि प्रमुख हैं। उन्होंने टी.वी. धारावाहिकों और फिल्मों में भी प्रचुर काम किया है। इन्हें केन्द्रीय और उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के पुरस्कार, यशभारती पुरस्कार, महिला शिरोमणि पुरस्कार आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।अतः आप एक बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार एवं रंगकर्मी हैं।

नादिरा जी का 'जी जैसी आपकी मर्ज़ी' नारी की अस्मिता और उसके जीवन संघर्ष व प्रतिरोध की अभिव्यक्ति करनेवाला सशक्त नाटक है। इसमें स्त्री को लेकर रूढ़िवादी समाज की मानसिकता को उजागर किया गया है। इस नाटक में पुरुष वर्चस्विता और पुरानी मान्यताओं के कारण तमामउम्र पुरुष की आज्ञा का अनुसरण करती, तकलीफ झेलकर कठपुतली सा जीवन बिताने केलिए विवश चार स्त्रियाँ (दीपा,वर्षा,सुल्ताना और बबली)के ज़रिए स्त्री अस्मिता और उसके प्रतिरोध की चर्चा की गयी है। चारों स्त्रियों ने समाज से बहुत सारे सवाल पूछे हैं ,लेकिन उनका उत्तर आज तक उन्हें नहीं मिला है। प्रस्तुत नाटक में ग्यारह साल की दीपा अपने बाप केलिए बोझ है। पिता बेटे से लाड प्यार करता है और दीपा पर अत्याचार। दीपा को हमेशा किसी न किसी कारणवश प्रताड़ित होकर मार खाना पड़ता है और अंधेरी कोठरी में बंद होना पड़ता है। लड़की होने से दीपा और उसकी बहन को कभी कोई नहीं पूछता। ऐसे में दीपा घर पर अपने अधिकारों को लेकर ,अस्तित्व को लेकर यों सवाल उठाती है, ऐसा क्यूं होता है? क्यों हम बहनों को मार पड़ती है? क्यों भैया इंग्लिश मीडियम में और हम बहनें हिन्दी मीडियम में..? भैया को दो-दो ट्यूशन फिर भी घिसट-घिसट के पास होता है। हम बिना ट्यूशन के स्कॉलरशिप लाते हैं। फिर भी क्यों नहीं प्यार करते हमें सब लोग..? क्या बुराई है हममें, हमें भी तो प्यार चाहिए न? (नादिरा ज़हीर बब्बर,जी जैसी आपकी मर्ज़ी,पृ.18-19)

दीपा की तरह वर्षा भी स्त्रियों के अधिकार छिन जाने से दुखी है। उसे ऐसा लगता है कि लड़कियों को ही क्यों अपनी इच्छा,आकांक्षा,सपने सब कुछ न्योछावर करनी पड़ती है। पुरुषी अहं का वह विरोध करती है। कुछ करने,बोलने या पहनने तक का अधिकार लड़कियों को नहीं दिया जाता है। वर्षा समाज में हो रहे खोखले स्त्री मुक्ति पर व्यंग बाण छोड़ती है। वह पूछती है, किस चीज़ में मॉडर्न होते हैं ये लोग?

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

N.S.S. COLLEGE PANDALAM

PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandalam

और कभी चौकीदार की भूमिकाएँ भी निभाती है। वह अपनी ज़िन्दगी के अनुभवों का विस्तृत ब्यौरा स्वयं बहुत सूक्ष्म परिहास के धागों में पिरोकर प्रस्तुत करती है । वह हमें सम्वेदनशील उच्चवर्गीय समाज के पाखंड एवं ढोंग के बारे में सोचने के लिए बाध्य करती है। सकुबाई अपने अनुभव से उच्चवर्गीय लोगों की पोल खोलती है। पार्टी में उच्चवर्गीय स्त्री का चोरी करना, पति और पत्नी दोनों के गैर सम्बन्ध रखना, घर में पति द्वारा पत्नी की पिटाई होकर वैवाहिक सम्बन्ध बिगड़ना आदि इसके उदाहरण हैं। इन सब समस्याओं के लिए सकुबाई उचित समाधान भी ढूँढ निकालती है।

छोटी सी उम्र में अपने ही मामा द्वारा यौन-शोषण का शिकार होना, पढ़ने-लिखने की उम्र में घर-घर की नौकरानी बनना, छोटी बहन वासंती की आत्महत्या, पिता की मृत्यु, एड्स से पीडित पति की मृत्यु जैसी विपन्न परिस्थितियों में भी वह बिना हारे आत्मविश्वास एवं धैर्य के साथ आगे बढ़ती है।मामा द्वारा शोषित होने पर माँ ने सकुबाई को बहुत समझाया कि मामावाली बात को हर हाल में गोपनीय रखना है। इस असहनीय दर्द और अपमान के बारे में सकुबाई के विचार इस प्रकार हैं कि, ऐसे कितने सारे अपमान हम औरतें इसलिए सह लेती हैं कि घरों में कोई क्लेश न हो६ चाहे वह क्लेश हमें जीते जी जलाता रहे...। (नादिरा ज़हीर बब्बर,सकुबाई,पृ.32) सकुबाई निम्नवर्गीय कामकाजी नारी का प्रतिनिधित्व करती है जिसे दिन-रात कठिन मेहनत करने पर भी एक दिन की छुट्टी तक नहीं मिलती है। सकुबाई स्त्री पर हो रहे अन्याय, अपमान , शोषण आदि का विरोध करती है। इस प्रकार सकुबाई दृढ़ इच्छाशक्ति, आत्मविश्वास, साहस, मनोबल, मेहनत आदि सकारात्मक गुणों का प्रतीक बनकर प्रस्तुत होती है। ढलती उम्र में वह शिक्षा प्राप्त करने के लिए तैयार होती है। अतः सकुबाई नारी सशक्तिकरण एवं नारी-जागरण का उत्तम दृष्टान्त बनकर सामने आती है।

'सकुबाई' नाटक में नादिरा जी ने पुरुष वर्चस्व समाज में अपने अधिकारों के लिए लड़नेवाली निम्नवर्गीय कामकाजी नारी के प्रतिरोध को उजागर किया है। माँ ने सकू के भाई को पढाया लेकिन सकू को पढने नहीं दिया तो सकू ने अपनी बेटी को पढ़ाया-लिखवाया ताकि शिक्षा के बल पर वह आत्मविश्वास के साथ ज़िन्दगी का सामना कर सके। उसने जाना था कि शिक्षा ही स्त्री मुक्ति का रास्ता खोलती है। स्त्री पर हो रहे अन्याय, अत्याचार, अपमान, सब कुछ सकूबाई भी झेलती है। मगर वह तमाम मुसीबतों का प्रतिरोध करती है। अपनी इच्छाशक्ति और धैर्य से वह शिक्षित स्वावलंबी स्त्री को भी जागृत करने का सराहनीय कार्य करती है। यह स्त्री के आत्मविश्वास व हिम्मत का विजय है। इस प्रकार जीवन में अनेक मुश्किलों के होने के बावजूद भी हिम्मत से लड़कर अपने अधिकारों को पाने का सन्देश 'सकुबाई नाटक स्त्रियों को देता है।

संक्षेप में ,नादिरा जी के नाट्य लेखन में सदियों से दबी-कुचली और अस्मिता खोजती स्त्री को अस्मिता बोध से युक्त स्त्री बनाने का प्रयत्न होता दिखाई देता है। इसमें स्त्री के प्रतिरोध एवं प्रतिशोध का स्वर मुखरित होता है। नादिराजी स्त्रियों की समस्याओं को ही नहीं बल्कि उसके समाधान भी प्रस्तुत करने में सक्षम रहती हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों से प्रतिरोध करके स्त्री इस दुनिया में खुद की पहचान बनाये रखना चाहती है। असल में स्त्री का संघर्ष पुरुष से मुक्ति पाने केलिए नहीं ,बल्कि अपनी ताकत अर्जित करने केलिए है और यह स्थापित करने केलिए है कि वह भी समस्त अधिकारों को पाने की क्षमता रखती है।

सहायक आचार्या, हिन्दी विभाग
एन.एस.एस.कॉलेज, पंदलम

जुलाई 2022

STD: 10
Dr. Sheeba. T. Nair
Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

Principal
N.S.S. College Pandalam

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner